लेखक-

पण्डित गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्री

“ कला कलाके लिये है और जीवनके लिये भी ”

❋ ओं तत् सत् ❋

मालिनी-मन्दिर

या

फूलों की दुनियाँ

[फूलोंके सम्बन्धमें अ-भूतपूर्व हिन्दी काव्य]

लेखक—

पं० गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्री

भूमिका लेखक—

आचार्य श्रीश्यामसुन्दरदास बी० ए०

प्रकाशक—

श्री मकरन्द-साहित्य-मन्दिर

गाङ्गेय-भवन, २८०, चित्तरञ्जन एवेन्यू,

❋ कलकत्ता ❋

[मूल्य—बारह आने]

मुद्रक—
माधव विष्णु पराड़कर
ज्ञानमण्डल यन्त्रालय, काशी।

"कविं" सम्राज मतिथिं जनानाम्— श्री शुक्ल यजुर्वेद।

जयति जगत पावन करन, 'प्रेम' बरन यह दोय
—श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

विषय सूची

विषय सूची

विषय सूची

प्रवर्तते नाऽकृत-पुण्य कर्मणाम् प्रसन्न-गम्भीर पदा सरस्वती ।

—महाकवि भारवि

पावन सुजस कि ? पुन्य बिनु होई ।

—श्री गोस्वामी तुलसीदास

विद्यावतां सकल मेव गिरां दवीयः ।

—पण्डितराज जगन्नाथ

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक 'मालिनी-मन्दिर'में अनेक प्रकारके फूलोंका हृदयहारी वर्णन है। मालिनी-'मालिन'के मन्दिरमें जैसे रंग-बिरंगे फूल, गुच्छे, मालाएं तैयार रहती हैं, वैसे ही इस पुस्तकमें भी विविध पुष्प, गुच्छे और मालाएं हैं। कहीं सौरभमयी विकसित 'गुलाबकी माला' है तो कहीं मनमें चुभने वाली म्लान 'मुरझी माला' है। इसमें कई जगह नपे-तुले शब्दोंमें 'मालिनी छन्द'का भी सुन्दर प्रयोग किया गया है, इस कारणसे भी यह सरस नाम 'सार्थक' है। फूलोंकी मोहकता प्रत्यक्ष है। शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसका मन फूले हुए फूलोंको देखकर फूल न उठे ? इसलिये मानव-जीवनमें फूलोंका बहुत महत्त्व है। हिन्दी भाषामें अभी तक केवल पुष्पोंके विषयकी कोई पुस्तक नहीं थी। जहाँ तक हमारी जानकारी है, अन्य भारतीय भाषाओंमें भी ऐसी पुस्तक नहीं निकली। पं० गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्रीने राष्ट्रभाषा हिन्दीमें यह पुस्तक लिखकर एक बड़े अभावकी पूर्ति की है। इसमें शास्त्रीजीने स्वदेशके प्रसिद्ध २ प्रायः सब पुष्पोंका बड़ी सुन्दरताके साथ काव्यमय वर्णन किया है। विदेशसे आये कुछ 'प्रवासी पुष्पों'का भी चमत्कारिक वर्णन दिया है। एक एक फूलके अनेक नामोंका निर्देश, उनके आकार-प्रकारका उल्लेख, उनकी अवान्तर जातियोंकी

सूचना, उनके नयन-रञ्जक रङ्गोंका संकेत करके कविने इस पुस्तक-की उपयोगिता बढ़ा दी है। इस प्रकार हिन्दीके माध्यम द्वारा प्रकृति-प्रेमी छात्रों तथा अन्य जिज्ञासुओंको विविध पुष्पोंका मार्मिक ज्ञान प्राप्त होगा। शास्त्रीजीने विदेशी पुष्पोंका 'संस्कृत नामकरण' भी बड़ा सुन्दर किया है। अंग्रेजीकी शब्दानु-पूर्वी रखते हुए 'नामों'में कुछ अर्थ उत्पन्न किया है, उन्हें शुद्ध कर 'भारतीय' बना लिया है। यह कार्य नूतन शब्द-निर्माणकी दृष्टिसे बहुत महत्वपूर्ण है। इस समय भारतके विभिन्न प्रान्तोंमें नसरी-व्यवसाय 'उद्यान-व्यापार' विशेष उन्नतिपर है। यदि प्रान्तीय भाषाभाषी ऐसे नामोंको अपनायेंगे तो इससे हिन्दीका गौरव बढ़ेगा। अनेक नामों-मेंसे कुछ उदाहरण देखिये—शास्त्रीजीने 'डालिया' का बनाया 'दलीय', 'भारविना' का 'वरवीणा', 'करनेशन'का 'कर्णेशनि' और 'जैक् मैन् शिया' का बनाया—'जग मान सिया'।

गीत और छन्द

इस पुस्तकमें छन्दोंके साथ अनेक सुन्दर श्रवण-मधुर गीतों-का प्रयोग हुआ है। कुछ गीतोंकी लय एकदम अभिनव है। रसके आस्वादनमें मनको लीन कर देनेवाली ध्वनिका नाम 'लय' है। जिस लयमें जितनी लीन करनेकी शक्ति हो उसका उतनाही अधिक महत्त्व है। लय-निर्वाचनमें शास्त्रीजीको पूर्ण सफलता

मिली है। रचनाकी सरलता और उक्ति-वैचित्र्य इस पुस्तककी विशेषता है। 'कुन्द'के वर्णनकी ये पंक्तियाँ देखिये—

उस हल्की-सी खुशबूसे।
उस स्मित-सरलित चितवनसे॥
उस सहज 'सादगी' से हाँ।
किसकी आँखें नहिं खिंचतीं?

+ + + +

तुम 'तारों'-से जब चमको।
जब मधुमय हो मृदु गमको॥
तब पथिक-वदन-चन्द्रोंमें।
प्रिय कुन्द! 'कुन्द' खिल जाते॥

+ + + +

देश-भक्ति और संस्कृति

इस पुस्तकमें जगह जगह भारतीय संस्कृतिका समर्थन और देश-भक्तिकी पुट दिखायी पड़ती है। पढ़ते पढ़ते ऐसा भान होने लगता है, मानो अपनी आत्मा ही दूसरेके कण्ठ-स्वरसे बोल रही है। इसका मुख्य कारण है, शास्त्रीजीका यह उद्देश्य कि "कला 'कला'के लिये है और जीवनके लिये भी।" इसीलिये तुलसीदल—बिल्वपत्र—केवड़ा—सदाबहार आदि रचनाओं-

में पूर्वोक्त दोनों भाव निखरे पड़ते हैं। कुछ वाक्योंके रसका आस्वादन कीजिये—

"हे ! मेरे घरकी प्रिय तुलसी !
बार बार है तुझे प्रणाम"

+ + + +

'वीर-भोग्य है भू' यह गाती।
श्री-तरु ! तुम पर 'श्री' फूली ॥

+ ÷ + +

"हे कठोर-भुज ! वीर केवड़े !
उग्र ! तरुण ! पालक 'पण' के
'छूकर ही तुम कर देते हो,
'मातृ-भूमि' का जल सुरभित"

+ + + +

हन्त ! गिरे वे 'फूल' धूलमें
कृश-तनु कैसे काँप रहे।
'अनशन' से हो अति अशक्त हा !
प्राण 'प्राण-प्रिय' त्याग रहे ॥

+ + + +

रसोंका परिपाक

इस 'फूलोंकी दुनियाँ' में कई रसोंका समावेश किया गया है। विभिन्न प्रकारके फूल हृदयमें विभिन्न भावोंका उदय करते हैं। उनके रङ्ग-रूप, पुलिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग नाम, आपेक्षिक परम्पराके कथानक, रस-भेदका निर्देश करते हैं। कवि-दृष्टि भी इसमें प्रमुख कारण है। इस ग्रन्थमें ग्रथित रचना-मालाओंमें शृङ्गार, हास्य, वीर, शान्त तथा करुण रसकी रमणीय छटा दिखायी पड़ती है। पारिजात-सदासुहागिन-अन्तिकोण - वरवीणा - गुलाबकीमाला - चन्द्र-मल्लिका आदिमें शृंगार रसका अच्छा परिपाक हुआ है। 'टेसू' और 'गुल मखमल' में हास्यका, केवड़ा-बिल्वपत्र-सदाबहारमें वीर रसका, पुष्पाञ्जलि-तुलसीदल-पञ्चपल्लवमें शान्तरसका, 'मुरझी माला' तथा 'सूखे हुए ये फूल' में करुण रसका हृदयग्राही परिपाक हुआ है। कुछ रचनाओंमें कई रसोंका समावेश हुआ है। इस रस-निरूपणमें कविने 'कला' के कमनीय कलेवरको आकर्षक और उपयुक्त रङ्गोंसे रञ्जित किया है।

प्राचीनता और नवीनताका सामञ्जस्य

इधर कई वर्षोंसे प्राचीन परिपाटीकी कविता और अभिनव शैलीकी कवितामें घोर संघर्ष हो रहा है। हिन्दीमें यह संघर्ष इतना बढ़ गया है कि उभय पक्षके कुछ लोग परस्पर अनुचित आक्रमण करनेमें—गाली गलौजतक करनेमें—भी नहीं सकुचाते। विवेकशील साहित्यसेवी इससे राष्ट्रभाषा हिन्दीकी हानि समझते हैं।

दोनों प्रणालियोंमें गुण हैं। दोषोंका परित्याग कर गुणोंके ग्रहणसे ही राष्ट्रभाषाका हित हो सकता है। प्राचीन शैलीमें 'अभिधा'की प्रधानता, इतिवृत्तात्मक वर्णन, अलङ्कारोंका बाहुल्य, तथा वर्णिक छन्दोंकी ओर अधिक झुकाव है। नवीन शैलीमें अधिकाधिक व्यञ्जनाकी प्रधानता, संकेतात्मक वर्णन, छिटफुट चमकीले जड़ाऊ अलङ्कारोंका विन्यास तथा गीतोंकी ओर अधिक प्रवृत्ति है। काव्यकी विभूति 'रसात्मकता' रचयिताकी सामर्थ्यके अनुसार दोनों शैलियोंमें है। आलोच्य पुस्तकमें शास्त्रीजीने प्राचीन और नवीन दोनों शैलियोंका सामञ्जस्य किया है, दोनोंके उत्तम गुणोंको ग्रहण किया है, इसीलिये हमको यहाँ एक ओर हृदयको गद्गद करनेवाले गीत सुनायी पड़ते हैं—

"उस नवल हवामें अभिनव
तुम प्रिय 'पराग' भर देते
उस 'अरुण उषा' के आते
तुम चरण चूमते लगते"

[पारिजात]

दूसरी ओर सुन्दर 'सवैया छन्द'की स्वच्छन्द तानें—

"इन क्यारियोंमें 'गुलदाउदी' या,
गत जन्मके 'प्रेमकी ज्योति' जगी ?
सिर-हाथ-कटी पर ले 'कलसे'
व्रज-बालिका या मुसकाने लगी ?

मदमाती मनोहर गन्ध भरी
लड़की है 'कपूर' की रंग-रँगी ?
प्रिय 'गेंद' लिये अति उत्सुक सी
यह 'उर्वशी' या पुरु-प्रेम-पगी ?''

[चन्द्र मल्लिका]

कुछ अन्य बातें

इस 'मालिनी-मन्दिर' में उद्यान-सम्बन्धी भी अनेक बातें हैं। कौन फूल बड़े परिश्रमसे उत्पन्न किये जाते हैं ? कौन सहज ही निरन्तर उत्पन्न होते हैं, इत्यादि विषयोंपर प्रकाश डाला गया है। इसमें कुछ त्रुटियाँ भी हैं, जैसे कनैल, मालती, मन्दार आदिका वर्णन ही नहीं हुआ है। हसनहीना, जपापुष्प, रजनीगन्धा आदिका वर्णन अत्यन्त संक्षिप्त हुआ है, जो विस्तारके साथ किया जाना चाहिये था। आशा है आगे इन आवश्यकताओंकी पूर्तिकी जायगी। कई पुष्पों और पत्रोंके आयुर्वेदोक्त गुणोंका वर्णन भी शास्त्रीजीने किया है, जिससे पुस्तककी उपयोगिता और बढ़ गयी है।

उपसंहार

पुस्तककी भाषा प्रवाहमय है। व्याकरण, रीति, गुण, अलंकार, मनोविज्ञान आदिकी दृष्टिसे यह उत्तम कोटिकी रचना है।

पुष्पोंके विषयकी यह अनुपम कृति है। आशा है इस देदीप्यमान ग्रन्थ-रत्नसे हिन्दीके साहित्य-मन्दिरकी शोभा बढ़ेगी।

यदि इस वर्णनके साथ पुष्पोंके रंगीन चित्र भी दिये जा सकते तो पुस्तककी उपयोगिता और मनोहरता और अधिक बढ़ जाती। पर यह कार्य व्यय-साध्य है। आशा है अगले संस्करणमें इस ओर भी ध्यान देनेका उद्योग किया जायगा। अन्तमें हम शास्त्रीजीको उनकी इस उत्तम कृतिके लिये बधाई देते हैं।

श्यामसुन्दरदास

पुस्तक के रचयिता
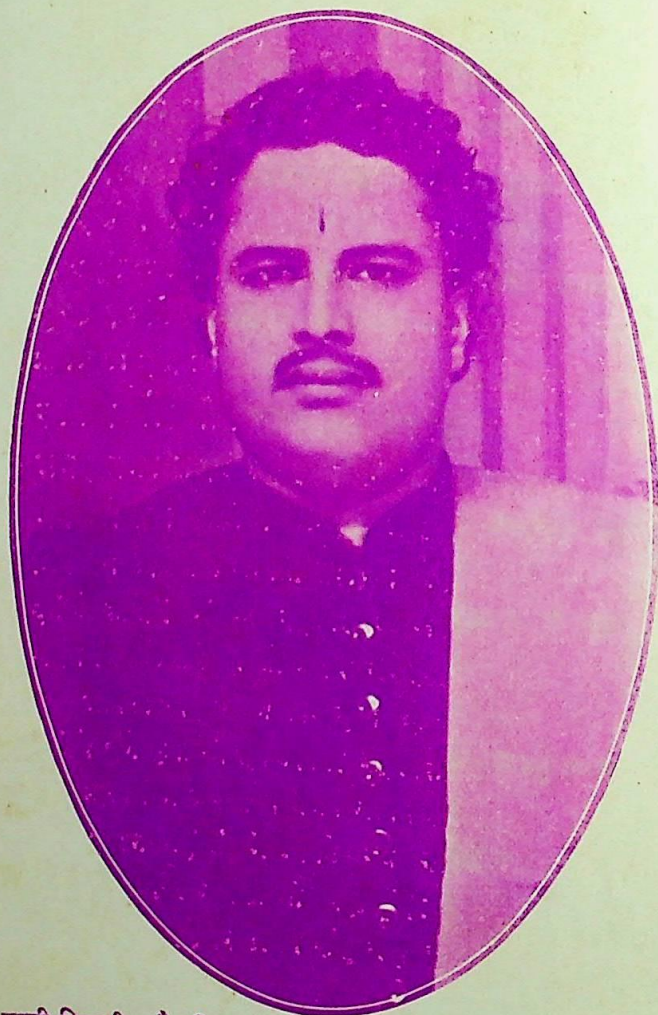
काशी विद्यापीठ और हिन्दू विश्वविद्यालयके भूतपूर्व अध्यापक, साहित्य-मार्तण्ड, कविचक्र-चूड़ामणि, काव्यतीर्थ, आयुर्वेद शास्त्री, पं० गाङ्गेय नरोत्तम शास्त्री, एम्० आर० ए० एस्०

कुछ सम्मतियां

रचना तथा रचयिताके सम्बन्धमें

अपने समयके अद्वितीय सम्पादक और समालोचक पूज्यपाद स्वर्गीय आचार्य पंडित महावीर-प्रसाद द्विवेदीकी सम्मति—

(१)

आसाद्य पत्रं तव पण्डितेन्द्र !
मया प्रमोदो नितरामवाप्तः ।
रसज्ञ ! काव्यज्ञ ! च विज्ञवर्य !
कृतज्ञतां मे विपुलां गृहाण ॥

(२)

कवीश्वर स्त्वं प्रतिभा-स्थिर स्त्वम्
साहित्य-शास्त्रे च 'कलाधर'स्त्वम् ।
इतीव मे 'सम्मति' मत्र शास्त्रिन् !
जानीहि गांगेय नरोत्तम ! त्वम् ॥

(३)

स्व-मातृभाषा-विनिबद्ध काव्यम्
एकाऽधिकं यत्प्रहितं त्वयाऽद्य ॥
तत्सर्व मेवातिशयेन रम्यम्
इत्येव विद्वन् ! विनयो मदीयः ॥

इति निवेदयति

द्विवेदी महावीर प्रसादः

हिन्दी साहित्य सम्मेलनके भूतपूर्व सभापति हिन्दी भाषामें तेजस्विनी तुलनात्मक समा-लोचनाके आदि प्रवर्त्तक, स्वर्गीय आचार्य पण्डित पद्मसिंह शर्माकी सम्मति—

श्रीयुत पंडित गांगेय नरोत्तम शास्त्रीजीकी कई पुस्तकें इधर मेरे देखनेमें आयीं। कुछ पुस्तकोंके अंश शास्त्रीजीके मुखसे सुने। श्री हनुमज्जन्म वर्णन, नूतन निकुंज, करुण तरंगिणी, गांगेय गीत-गुच्छक, गांगेय गद्यमाला प्रभृति पुस्तकोंसे आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभाका प्रमाण मिलता है। श्री गांगेयजीकी कविताएं परम रमणीय और सीधे हृदयतलको स्पर्श करनेवाली होती हैं। जगह-जगह उनमें पाण्डित्य और अनुभवके इत्रकी खूशबू गमकती है। शास्त्रीजी संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओंके सिद्धहस्त कवि हैं। सम्पति सम्बन्धी और अनेक प्रकारके मुक-दमोंके कार्योंमें संलग्न रहनेपर भी साहित्य-सेवाके लिए आप समय निकाल लेते हैं, जो सर्वथा सराहनीय है।

आपकी कार्य-प्रवीणतापर मुग्ध होकर लक्ष्मी और सरस्वती दोनोंने पूर्ण कृपा की है। आपकी यह विशेषता है कि विविध छन्दों और गीतोंमें नवो रसोंका वर्णन समान रूपसे खूबीके साथ करते हैं। 'नूतन-निकुंज' में आपने नव रसोंके साथ-साथ सहृदय-संभावनीय अन्य रसोंका भी बड़ा सुंदर वर्णन किया है। ईश्वर शास्त्रीजीकी उत्तरोत्तर उन्नति करे, यही शुभ कामना है।

—पद्मसिंह शर्मा

आधुनिक हिन्दीके 'आदि कवि', आदरणीय कवि-सम्राट पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय "हरिऔध" जी की सम्मति—

प्रियवर,

मैंने 'मालिनी मन्दिर' नामक आपकी नवीन रचना देखी। आप सहृदयताकी मूर्ति हैं, भावुकता आपमें कूट कूट कर भरी हुई है। कवि-कर्म-सरोजके आप रसिक मिलिन्द हैं, और हैं सरसताके आगार, फिर आपकी कविता मनोहारिणी क्यों न होगी? 'मालिनी मन्दिर' यथा नाम तथा गुण है। मैं उसे देख कर अधिक आल्हादित हुआ। वन्दनीय 'वीणा-पाणि' के कमनीय कण्ठमें जिस कलित कुसुमावलिका हार आपने डाला है, उसका सौरभ मनोमुग्धकर ही नहीं, अतीव प्रफुल्लता-कारक भी है। उसमें विकास है, सरसता है, और है कवि कर्मकी मनो-रंजकता। मैं ऐसा मनोरम ग्रन्थ लिखनेके लिये हृदयसे आपका अभिनन्दन करता हूँ। विश्वास है इसका समुचित समादर होगा। भाव, भाषा, उक्ति, युक्ति आदिमें ग्रन्थको विशेषता प्राप्त है।

भवदीय—

हरिऔध
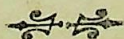
काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके हिन्दी-विभागके अध्यक्ष एवं प्रधानाध्यापक, भाषा-विज्ञानके सुप्रतिष्ठित विद्वान् आचार्य पंडित केशव-प्रसाद मिश्रकी सम्मति—

पण्डित गांगेय नरोत्तम शास्त्री जैसे संस्कृतके उद्भट कवि और पण्डित हैं वैसे ही हिन्दीके भी 'उद्दाम कलाकार' हैं। आपने हिन्दीमें प्रचुर रचना की है और अभी तक बराबर हिन्दी साहित्यको अपनी 'देन' का दान दिये चले जा रहे हैं। प्रतिभा, ज्ञान, सौन्दर्य-बोध, कल्पना आदि कवित्वके साधनोंके आप धनी धोरी हैं।

आपका 'मालिनी-मन्दिर' सचमुच फूलोंकी दुनियाँ है, इस दुनियाँके आप असीर हैं। जिस फूल पर आप फिदा हुए हैं उसकी पंखड़ी पंखड़ी आपने परतोल डाली है। **फूलोंके प्रति आपके 'प्रेम लपेटे बैन' मुझे बहुत ही भाये। आशा है आप** इसी प्रकार अपनी प्रतिभाके पुष्प खिलाते रहेंगे।

केशवप्रसाद मिश्र

महान् भारतीय कलाविद्, ललित 'कला-भवन' के प्रतिष्ठाता सुकवि और सुलेखक श्रीमान् राय कृष्णदासजी का अभिमत—

विद्वद्वर श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्री, काव्यतीर्थ, आयुर्वेद शास्त्री की अनोखी प्रतिभा हिन्दी जगत्‌में अद्वितीय है। खड़ी बोलीमें फूलों पर 'मालिनी-मन्दिर' या 'फूलोंकी दुनियाँ' नामसे उन्होंने एक बेजोड़ काव्य-पुस्तक तैयार की है, जिसका विषय खड़ी बोलीके लिये सर्वथा नूतन है।

प्रस्तुत रचनामें उन्होंने देशी फूलोंके साथ साथ विदेशी फूलोंको भी अपनी कविताका विषय बनाया है और उनके रूप रंग आदिका बड़ा बारीक निरीक्षण किया है। साथ ही उन्होंने विदेशी फूलोंके संस्कृत नाम करण भी किये हैं और उनमें ऐसी बारीकी खर्च की है कि वे मूल नामोंसे भिन्न नहीं जान पड़ते। इस युगमें जब विदेशी नामोंके संस्कृत नामकरणकी चर्चा चारो ओर हो रही है, शास्त्रीजीका यह काम अभिनन्दनीय माना जायगा।

सभी पुष्पोंके स्वभाव निरीक्षणमें शास्त्री महोदयने अपने जीवनके अनेक दिवस व्यतीत किये हैं एवं दिनको दिन और रातको रात नहीं समझा है तथा उस सारे परिश्रमका फल इसके द्वारा वितरण किया है।

शास्त्रीजीकी कविता व्यंजना प्रधान होती है, उनकी विलक्षण प्रतिभाकी ऊँची उड़ानके अद्भुत नमूने इस पुस्तकमें 'अथ' से 'इति' तक पाये जाते हैं; उन्होंने इन कविताओंमें सुकुमार ही नहीं अनेक उदात्त भाव भी भरे हैं, एवं वेद भगवान्से लेकर आयुर्वेद तक नाना शास्त्रोंके अपने गंभीर ज्ञानको ओतप्रोत कर दिया है। इसमेंकी कई कविताओंको अपने सुमधुर कण्ठसे सस्वर सुनाकर गांगेयजीने हमें चमत्कृत एवं एक विशेष रसमें सराबोर कर दिया।

हमें पूर्ण आशा है कि इस अनुपम रचनासे सहृदय समुदाय एक अभूतपूर्व रसका अनुभव करेगा और शास्त्रीजीको साधुवाद दिये विना न रह सकेगा।

कृष्णदास
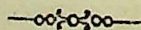
काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके अध्यापक, अनेक साहित्यिक ग्रन्थोंके निर्माता, पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र एम. ए., साहित्यरत्न की सम्मति—

पंडित गांगेय नरोत्तम शास्त्रीका 'मालिनी-मन्दिर' प्राप्त हुआ। इस मन्दिरमें प्रवेश करते ही पुष्पोंकी प्रफुल्लता, राग-रंजन, परिमल, मकरन्दविन्दु, पराग, केसर आदि कितने ही आकर्षण मिले। एक मनसे एक साथ सबका रस लेना दुष्कर हो उठता है। जहाँ मन रमता है रमा ही रह जाता है, यह रमणीयता क्षण क्षणमें नवता प्राप्त करनेवाली है, मनको विरत भी करूँ तो कैसे? वस्तुतः यह 'फूलोंकी दुनियाँ' ही निराली है। निराली भाषा, निराला संगीत, निराला छन्दो-विधान, निराली भावाभिव्यक्तिसे हृदयमें निराली ही अनुभूति होती है, 'मालिनी' पर मँडराने वाला मन एक दम 'अलि' हो जाता है। मेरा विश्वास है कि हिन्दी-वाटिकामें 'मालिनी-मन्दिर' की शोभा मनोहारिणी है। भारतीके बहुतसे पुजारी इसमें अपना मन रमाएँगे और इस मन्दिरके तट प्रदेशमें प्रवाहित होनेवाली 'गांगेय'-काव्य-धारामें स्नान कर मनकी क्लान्ति मिटाएँगे।

विश्वनाथप्रसाद मिश्र
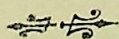
टीचर्स ट्रेनिङ्ग कालेज काशीके प्रोफेसर, साहित्याचार्य, पं० सीताराम चतुर्वेदी 'हृदय' एम.ए, बी.टी. एल्-एल्. बी, महोदय की सम्मति—

हिन्दी तथा संस्कृतके उद्भट विद्वान् तथा कवि पंडित गांगेय नरोत्तम शास्त्रीजीकी नई सृष्टि 'फूलों की दुनियाँ' में प्रवेश करके हिन्दी काव्यके एक नये उपवन का आलोक मिला। शास्त्रीजीने काव्यका एक नया रूप लेकर 'मालिनी-मन्दिर' की प्रतिष्ठा की जिसमें भारतीय सुमनोंके गुण गौरवके साथ साथ उन विदेशी कुसुमोंका भी आदर किया गया है जिन्होंने अपने रूप और गन्धसे कवि-हृदयमें गुदगुदी उत्पन्न की है और कवि-प्रतिभा को जागरित कर दिया है। भारतीय काव्य धारामें इस नयी कृतिका मैं अभिनन्दन करता हूँ और आशा करता हूँ शिक्षा-विभाग इस पुस्तकको स्कूलके बालकों और बालिकाओं तक पहुँचा कर उनको एक नये काव्य-रूपसे परिचित करायेगा और सुमन-संसारकी गाथाओं द्वारा उनके हृदय-सुमनोंको प्रफुल्लित होनेका अवसर देगा।

कविकी एक बात मुझे बहुत ही अच्छी लगी, वह है विदेशी-सुमनोंके भारतीय नाम देनेकी प्रवृत्ति। विलायती 'आइपोनिया' और 'भारविना' जब 'आयपुण्या' और 'वरवीणा' बन कर मालाओंमें गुँथ कर श्री विश्वनाथजीकी जाको आतुर होंगे उस समय आर्येतर कहला कर वे मन्दिरसे बाहर ही नहीं पड़े रहेंगे,

भगवान उन्हें अपनावेंगे और अपना शृङ्गार उनसे करा कर उनको भी आदर देंगे।

आशा है 'गांगेय जी' इसी प्रकार हिन्दी-साहित्यकी श्री-वृद्धि करते रहेंगे।

सीताराम चतुर्वेदी

अनेक हिन्दी पत्रोंके सफल सम्पादक, तत्वदर्शी समालोचक, हिन्दू विश्वविद्यालयाऽध्यापक पं० नन्ददुलारे वाजपेयी एम्. ए. का अभिमत—

'मालिनी मंदिर' या फूलोंकी दुनियाँकी अग्रिम प्रति मैंने देख ली है। इसमें श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्रीजीने अनेक देशी और विदेशी फूलोंका स्वरूप परिचय काव्यमयी शैलीमें कराया है। प्रत्येक पुष्पके फूलनेके समय, उसके रंग रूप और गुण तथा अन्य विशेषताओंका परिचय कराना और साथही काव्यकी सुषमा सुरक्षित रखना कितना कठिन कार्य है, यह सभी सहृदय समझ सकते हैं। एक प्रकारसे यह विज्ञानको कलाका स्वरूप देनेकी चेष्टा है। शुष्क विवरणको कल्पना और भावनाकी सुन्दर सज्जामें सजानेका प्रयास है। विज्ञान और कलाका यह ग्रंथि-बंधन हमारे मित्र शास्त्रीजीने इतनी सफलताके साथ कराया है, इसे देखकर प्रसन्नता हुई। हम शास्त्रीजीको उनकी इस सुंदर चेष्टाके लिए साधुवाद देते हैं।

नन्ददुलारे वाजपेयी

हिन्दीमें हास्यरसके प्रख्यात सुकवि और सुलेखक ढबदार...'बेढब' सुनानेवाले, श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़, एम्. ए., एल्. टी. की सम्मति—

हिन्दी जगतके भावुक तथा सहृदय साहित्यकार पंडित गांगेय नरोत्तम शास्त्रीजीकी कृपासे "मालिनी-मन्दिर"की सैर करनेका अवसर मुझे प्राप्त हुआ। पुष्पोंसे सुसज्जित नवीन क्यारियाँ, मादकता लिये उनका सौरभ, भारतीय तथा विदेशी पुष्पोंकी सुन्दर सजावट मनको मोह लेती है। यहाँ पुष्पोंको वृत्तोंमें बाँध रक्खा है। प्रत्येक पंक्ति सुन्दर है। हिन्दीमें यह एक नया प्रयास है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे हिन्दी-संसारकी शोभा बढ़ेगी। शास्त्रीजी ऐसे चतुर शिल्पीने इस मनोरंजक मन्दिरका निर्माण बड़ी सुन्दरतासे किया है। इस 'फूलोंकी दुनियाँ'में साहित्यिक-चंचरीकोंको रस, रंग, सौरभ सभी मिलेंगे।

बेढब बनारसी

हिन्दीके सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय दैनिक "आज"के सुप्रसिद्ध संपादक, युक्तप्रान्तके प्रमुख कांग्रेसी नेता, विद्वान् सुलेखक पंडित कमलापति त्रिपाठी शास्त्री, एम. एल. ए. की सम्मति—

कुसुमोंकी जिस नैसर्गिक रमणीयतापर अनादि कालसे भावुक कवि-हृदय मुग्ध होता चला आ रहा है, उसी सहज रम्यतासे आकृष्ट होकर 'पंडित गांगेय नरोत्तम शास्त्री' जीने 'मालिनी-मन्दिर' या 'फूलोंकी दुनियाँ' का निर्माण किया है।

यह 'फूलोंकी दुनियाँ' अपने ढंगकी निराली रचना है। हिन्दीमें विभिन्न सुमनोंपर अनेक कवियोंने प्रगीत मुक्तकोंकी रचनाएँ की हैं, पर प्रस्तुत-संग्रहके समान अनेक प्राच्य-पाश्चात्य पुष्पोंपर इतनी कविताएँ, सम्भवतः, एकत्र उपलब्ध नहीं हैं। इस संग्रहमें कविने विदेशी फूलोंका भारतीय नामकरण भी किया है, जिससे उसकी विद्वत्ताकी पूरी झलक दिखायी पड़ती है। **सुमनोंकी सूक्ष्म विशेषताओंका वर्णन देखकर उनके प्रति कवि-हृदयका स्वाभाविक अनुराग लक्षित होता है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत ग्रन्थमें प्राचीन तथा अर्वाचीन अभिव्यंजन-शैलियों और छन्दोंका सुन्दर समन्वय भी किया गया है।**

पत्रों और पुष्पोंके चिकित्सोपयोगी गुणोंका वर्णन, वर्णनात्मक श्लिष्ट शब्दार्थ आदिके कारण रचनाकी काव्यानुकूल संवेदन-

शीलतामें कहीं कहीं कुछ-कुछ शिथिलता आ गयी है, पर कविके अगाढ़ पांडित्य, उसकी ओजोमय शब्दविन्यास-चातुरी एवं मनोरम कल्पनाकी प्रचुरताके कारण ग्रन्थ बड़ा सुन्दर हुआ है। आशा है इस 'मालिनी-मन्दिर' का सौरभ साहित्यिक-समाजको आमोदित करेगा।

कमलापति त्रिपाठी

प्रकाशकोंका निवेदन

हिन्दी-प्रेमी जनतासे सादर प्रार्थना है कि वह श्रीमकरन्द-साहित्य-मन्दिर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें लेकर इस संस्थाकी सहायता करे। यह संस्था अपेक्षाकृत कम मूल्यमें अच्छेसे अच्छे काग़ज पर छपी, मौलिक साहित्यकी, उत्तमोत्तम पुस्तकें जनता-जनार्दनके कर-कमलोंमें पहुँचानेका 'व्रत' लेकर खड़ी है। इसकी सचाई 'इस पुस्तक'से भी प्रमाणित होती है। और भी रियायत करनेके लिये यह सूचित किया जाता है कि दूसरी सूचना न निकलने तक उन 'ग्राहकों'को १५ प्रतिशत मूल्यमें छूट दी जायेगी, जो एक साथ २५ पुस्तकें खरीदेंगे। आशा है इस संस्थाकी नयनाभिराम सजावट (गेट-अप) से युक्त, कला-संयुक्त, पुस्तकोंपर जनताकी स्नेह-पूर्ण कृपादृष्टि होगी।

विनीत—

कृष्णकान्त शास्त्री

विष्णुकान्त शास्त्री

श्रीकान्त शास्त्री

[श्रीमकरन्द-साहित्य-मन्दिरके स्वत्वाधिकारी]

समर्पण

माँ !

ममतामयी !

माँ !

दुग्ध-धार और अश्रु-धार दोनोंसे एक साथ, इस शिशु शरीर-को सिञ्चित करनेवाली तुम्हारी 'वत्सलता'के प्रति यह मस्तक 'नत' है। जन्म देनेवाली ! जननी ! इसके सकल मनोरथोंकी, सम्पूर्ण शक्तियोंकी, विविध विचारोंकी 'मूल कारण' तुम हो। युग बीत गये,...सुना है,—तुमने इस शरीरके विषयमें बड़ी ! बड़ी ! सम्भावनाएँ प्रकट की थीं, ऐतिहासिक शुभ-कामनाएँ स्वर्णमय वर्णोंमें अङ्कित की थीं।

माँ ! समय पाकर पूर्ण होनेवाली इन्द्रधनुष-सी रङ्गीन उन... घटनाओंको तुम अपनी आँखोंसे न देख सकीं ! प्रबल 'झंझावात'ने सुकुमार पौधेपर छाया करने वाली 'मालती लता' को उखाड़कर फेंक दिया। प्रायः १५० मनुष्योंके प्राणोंको सोख लेनेवाली, सैकड़ों परिवारोंमें वर्षों तक अश्रु-वर्षा करनेवाली, काशीकी उस...ऐति-हासिक 'नौका-दुर्घटना'ने तुम्हें असमयमें ही जल-समाधि दे दी !

उस...खूनी रातमें, श्री गङ्गाजीकी अगाध जल-धाराके मध्य, मृत्युकी दाढ़ोंसे खेलते हुए, इस 'गाङ्गेय'को तुम्हारे आशीर्वादोंने ही सुरक्षित रक्खा। माँ ! तुम्हारा नाम* ही इन कानोंने सुना है,

---

* काशीके सुप्रसिद्ध पण्डित नारायणमिश्रजीकी पुत्री, परम विदुषी, स्वर्गीय श्रीमती रामदेवीजी।

उन आँखोंमें निरन्तर समायी रहनेवाली भी इन आँखोंको कुछ स्मृति नहीं है। फिर भी...इस ध्याताको तुम्हारा पूरा ध्यान है, ध्यान-योगसे। इस 'आत्मा'में और आगेकी वंश-परम्पराकी आत्मामें अंशतः अवतीर्ण होकर, माँ! तुम 'अमर' हो गयी हो।

उस...पुण्य-स्मृतिकी रेखाको 'ध्रुव'की तरह नील नभमें निरन्तर अङ्कित रखनेके लिये इस लेखनीका यह ललित प्रयास है। लो! माँ! इस 'मालिनी-मन्दिर'के पुलकित पुष्पोंको प्यारसे अङ्गीकार करो।

यह 'फुलोंकी दुनियाँ' तुम्हारे चरणोंमें समर्पित है, इसे स-स्नेह स्वीकार करो। तुम्हारी करुणा-कोरसे इसका सौरभ सुफल हो। अन्तमें यह प्रार्थना है कि—

'स्पन्दित' करें तुम्हारा अञ्चल,
माँ! मेरे प्राणोंके गीत।
इन श्वासोंको...उन श्वासोंने,
कभी किया था, जहाँ पुनीत॥

बस!

विजया दशमी
श्री विक्रम संवत्
१९९८

तुम्हारा लाल
'गाङ्गेय'

ॐ तत् सत्

मालिनी-मन्दिर
या
फूलोंकी दुनियाँ
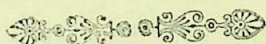
❀ पुष्पोंपर पुष्पाञ्जलि ❀

(१)

मङ्गलमय ! हे मधुमय ! स्मितमय !
हे 'वन-देवी' के नयनो !
इस वसुधाके जीवन-धन ! हे !
प्रकृति-नटीके प्रिय 'चयनो' !
हे विकसित ! हे छविमय ! रसिको !
हे 'तितली-दल' के भ्रमरो !
प्रेम-सहित पुष्पाञ्जलि है यह,
हे नन्दनवनके 'अमरो' !!

(२)

'सूर्य' कमलको कर जोड़ें नित,
धोते 'विधु' जूहीके पद ।
'तारे' करें आरती जगमग,
वायु-वरुण हैं नत, गद्गद ॥
देवोंके, नर-देवोंके मन,
मोहित तुम करने वाले ।
मन्दिर, चर्च, मकबरोंमें भी,
प्रभु-सम तुम पुजने वाले ॥

(३)

'चमत्कार' प्रिय पुष्पो ! तुममें,
'कुमुद' रात...जप करते जाग ।
'सूर्यमुखी' हैं तरणि-तपोरत,
'चन्द्रमल्लिका' सिद्ध-सुहाग ॥
उन कलियोंके 'फ़ुर फ़ुरा' रहे,
अधर बाँध लेते हैं नैन ।
'सोऽहं' सा सुखकर वह सौरभ,
मूर्छित कर...कर देता चैन ॥

(४)

फूलोंसे फूला...यह 'मानस'
लहरें करती हैं हलचल।
'हंस' हर्षमय हो, गुण गायें,
मोती दें 'जयमाल' विमल॥
हृदय-नयन ये 'प्रणत' प्रणयसे,
सुमनोंके प्रति पल-पल पर।
इन सुरभित गीतोंकी है यह,
'पुष्पाञ्जलि' प्रिय पुष्पों पर॥

* पारिजात *

(१)

वह 'मूँगे' सी प्रिय डंडी।
वर 'मोती' सा वह मुखड़ा ॥
वह रम्भा-मुख-सा 'सौरभ'
पारिजात ! पाया तुमने ॥

(२)

उस 'सन्ध्या' से मिलते ही
तुम सितसे प्रमुदित होते।
लख रागमयी 'रजनी' को
तुम पुलकित हो, खिल जाते ॥

(३)

उस 'नवल हवा' में अभिनव
तुम प्रिय 'पराग' भर देते।
उस 'अरुण उषा' के आते
तुम चरण चूमने लगते॥

(४)

तुम रसिक 'मृदुलतम' प्रिय हो
विरह-तापसे मुरझाते।
उस 'नन्दन वन' से आये
सचमुच तुम 'देव-कुसुम' हो॥

(५)

तुम विविध नाम-गुण धारी
प्रिय! 'पारिजात'...'शेफाली'।
सुर-सदृश ! सुधाके सिञ्चक
जय 'हारसिंगार'! सुगन्धित॥

卐

❀ पुलकित बेला ❀

(१)

नवल रुचिर 'तारा'-तीर से छू गया सा ।
उस 'सरस हवा' की सांसको पी गया सा ।।
मृदुल-हृदय, प्रेमी,
देख माधुर्य-वेला
मधुमय अलवेला
आज 'बेला' खिला है ।।

(२)

रुचिर हृदयहारी, 'हार' मुक्तावली सा ।
प्रियवर! वह तेरा चन्द्र-सी 'तृप्ति' देता ॥
उर-नयन कपोलों
में "तड़ित्स्पर्श" जैसी ।
सिहरन कर देता
जो-भुजा-वल्लरी सा ॥

(३)

अमित उस "गिरा" के स्वेदकी बूंद है या ।
रुचिर, विपिन बाला-नाकका "लौंग" है तू ॥
सघन पंखुरियों से
पूर्ण "पीयूष-बिन्दु" ।
सचमुच! प्रिय! मुक्ता-
मञ्जु तू 'मोतिया' है ॥

❀ जपापुष्प ❀

यह ललित 'ललाई' आज पाई कहाँकी !
अधर-सदृश बाँकी हे जपापुष्प, तूने
चटुल मृदुल 'जिह्वा' भी उड़ाई कहाँसे
कह ! किस अबलासे ये बला मोल ली है ?

❀ चकित चमेला ❀

अयि ! चकित चमेली !
काँप क्यों तू रही है ?
किस ? कुमति-नदीमें
आज यों तू बही है ॥
बस ! डर इतना ही ?
'मालिनी' तोड़ लेगी ।
अ—गुण-गठित......
गुच्छेमें मुझे जोड़ देगी ॥

❀ बिल्व-पत्र ❀

(१)

बिल्व पत्र ! हे हर-त्रिनेत्र ! हे
जय 'श्री-तरु' के कर ! सद्गुण !
'शिव-काञ्ची' के हे प्रिय काञ्चन !
जय त्रिदोषहर-मूल ! त्रिगुण !

(२)

तीखे-तीखे वे 'शर' लख कर
'विहग-चोर'—दल—मति भूली ।
तुम हर-प्रिय ! तुम 'बम्-बम्-बम्'-प्रिय ।
तुम 'गोलक' धर तुम शूली ॥

(३)

तुम फोड़ भूतल, कण्टकित-भुज
हो खड़े, निज जगह कर ली।
'वीर-भोग्य है भू' यह गाती।
श्री-तरु ! तुम पर 'श्री' फूली ॥

(४)

तुम तिक्त, उष्ण, तुम ज्वलित वन्हि !
तुम वात-केसरी, ज्वर-हारक ॥
तुम त्रि-पत्र ! रुचिकर ! गुणमय-रस
तुम शत्रु-रोग-गणके नाशक ॥

(५)

परम सुगन्धित, 'सु-मन'-समन्वित !
सिद्ध महौषध ! जय ! श्री-फल !!
पत्र-संघ-नृप ! बिल्वपत्र हे !
'सदाशिव'- प्रिय ! पूर्ण सफल !!

❀ फूलोंका गुच्छा ❀

यह विविध-सुमोंका 'गेंद' सा मञ्जु गुच्छा
रह-रह रसिकोंको रङ्गसे खींचता है।
पर खुद खिंचता है 'मालिनी' का सिखाया
हिय तक रसिकाओंके बिना रङ्ग ही जो ॥

❁ गेंदा ❁

(१)

यह प्रिय 'वसन्त'-कला-हृदय-सा
गुरु, गठित 'गेंदा' खिला।
उस गगन-प्रियतमसे 'धरणि' को।
'गंद' सा गेंदा मिला॥

(२)

इस प्रिय वसन्ती रंगमें रँग
यह 'वसन्त' स्वयं बना।
पथ, क्यारियाँ, गमले रंगे सब
की वसन्ती अर्चना ॥

(३)

उस प्रिय हिंडोलेमें लगा यह
'पीत' वर कान्ताऽनुचर,
उन मधु-महोत्सव-रत स्त्रियोंको
यह झुलाता...झूल कर ॥

(४)

फिर गँज गये 'गजरे' विपणिमें।
फिर रसिक गेंदा खिला ॥
फिर मधुर, मञ्जुल, मालिनों से
मुदित यह गेंदा मिला ॥

❀ गुलमेंहदी ❀

(१)

'धरणि' करमें मेंहदी-सी
छा रही गुलमेंहदी ।
कन्यका-सी क्यारियोंमें
भा रही गुलमेंहदी ॥

(२)

'मोर' की ये मृदु कलम हैं,
'रागिनी' हैं रागकी ।
'इन्द्रधनु' की टुकड़ियाँ हैं,
'फूलझड़ियाँ' बागकी ॥

(३)

लाल, पीली, श्वेत, नीली
'साड़ियों' से सज रही ।
सखि-हवाकी उँगलियोंसे
बीन-सी यह बज रही ॥

(४)

आज आँखोंमें रंगीली
छा गयी गुलमेंहदी ।
मधुप-मिस इस कानमें कुछ
गा गयी गुलमेंहदी ॥

❀ गुलमखमल ❀

(१)

तुम, लाल 'मखमल' से मनोहर
गुलमखमल ! गुल खिला रहे !!
गुल हो जाते और फूल जब,
तब भी यह 'गुल' खिला रहे !!

(२)

टिमटिमा रहे फूल-दीपका
'गुल' काटा गुलमखमलने ।
हवा-हाथमें दी न ? सुपारी
गुल कर 'सब' गुलमखमलने ॥

(३)

गुलमखमलने 'गोल' बाँध कर
गुल–गपाड़ा किया कठोर ।
'मधुमक्खी' मिस 'पुलिस' दौड़ कर
आयी गुलशन, सुन गुलशोर ॥

(४)

इतनेमें ही गुलमखमलने
'गुलमेंहदी' को मारी गोली ।
गुलदान गिरा, 'गुलसब्बो' भी
'गुलखैरू' ने भर ली झोली ॥

(५)

'गुल लाला' ने गुलचे मारे
'माफी' दी गुलमखमलको ।
फिर 'तितली' से मिल जारी हैं
'गुलछर्रे' गुलमखमलके ॥

❀ गुलचाँदनी ❀

(१)

'राजहंसी' सी पुलकमयि,
'प्रीति' सी मृदुहासिनी ।
चमचमाती 'चाँदनी' सी,
यह खिली गुलचाँदनी ॥

(२)

सखि ! सदा संवेदनामयि !
बिन रुके तुम फूलती ।
सुख-दुखमयी जीवन-'तरी' को ।
खे रही हो फूलती ॥

(३)

इस 'मुग्ध' मस्तकमें सुधा-द्रव
झँस रही गुलचाँदनी ।
हर डालमें...हर हालमें है
हँस रही गुलचाँदनी ॥

❀ सन्ध्या मालती ❀

या

"सदासुहागिन"

(१)

तुम 'सन्ध्या' से पहले ही
कर देतीं सन्ध्या-आरति ।
भर रात 'जगी' रहनेको
तुम 'योगिन'-से दृग खोलो ॥

(२)

वह त्रि-गुण 'घुटी' क्या पीली ?
तुम 'त्रिविध' अरुण, सित, पीली ।
निशिमें यौवन दिखलातीं ।
तुम दिनमें मुरझा जातीं ॥

(३)

वे छोटे-छोटे 'क्षुप' हैं
या, 'कुसुम-शस्त्र' के 'क्रुप' हैं ।
'वह खिलना' हन्त ! गजबका
वह मिलना नित सु-मनोंका ॥

(४)

तुम 'विविध नाम' युत रानी !
प्रिय'कृष्णमण्डि' ! सुखदानी !
तुम 'सन्ध्यामालति' ! रानी !
तुम 'सदासुहागिन' रानी !!

(५)

तुम प्रिय 'सु-मनों' की माता
सुरभित शीतल श्वासमयी ।
इस क्रान्त कुसुम-से हियको
'विकसित' करती रहो ! यहाँ ॥

* भीषण शस्त्रास्त्र बनानेवाले, यूरोपके प्रसिद्ध क्रुपके कारखाने ।

❀ दूर्वा ❀

(१)

उस 'हर्ष' के अङ्कुर ये हैं उगे,
प्रकृतिकी 'हरी' या बिछी है दरी।
'गण' की 'गण-नायक' की अथवा
प्रिय औषधि है शुभ स्वास्थ्यकरी ॥
'पुलकावलि' है पृथिवीकी उठी,
'वनदेवी' की चोली खिली है हरी।
इन आँखोंमें आयी 'तरी' गहरी,
प्रिय 'दूर्वा' की दिव्य छटा छहरी ॥

(२)

यह 'दूब' का आसन या 'अमरासन',
देवी 'हवा' इसको बरती ।
'बुध' बैठे कहीं, 'गुरु' बैठे कहीं,
सुर-बाला हैं 'तान' कहीं भरती ॥
'रमतों' की है टोली कहीं रमती,
वर 'किन्नरियाँ' कहीं संचरती ।
लड़ जाती कहीं दृग-'जोड़ियां' हैं,
हरी दूब हरी 'स्मृति' है करती ॥
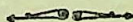
❀ खिले फिर रंग रंगीले फूल ❀

खिले फिर रंग रंगीले फूल !
सजे ये सहज सजीले फूल !!

किसलय-कोमल लता-गोद्में
तुहिन से गीले...गीले फूल ।
उठे ये छहर छबीले फूल,
खिले फिर रंग रंगीले फूल ॥

अलियोंकी गीताऽवलियोंसे
हँसे ये रुचिर रसीले फूल ।
चिहुँकते चट चटकीले फूल,
खिले फिर रंग रंगीले फूल ॥

मञ्जुल छवि से 'तितली-दल' को,
लुभाते गजब ! गठीले फूल ।
दिखे, फिर 'नवल' नुकीले फूल,
खिले फिर रंग रंगीले फूल ॥

एक-एक से प्रणय-भरे मृदु,
मिले ये नीले-पीले फूल ।
'गमकते' गुरु गरबीले फूल,
खिले फिर रंग रंगीले फूल ॥

प्रिय 'गाङ्गेय' प्रेममें पग कर,
झूमते नित्य ''नशीले'' फूल ।
दिखे फिर ललित लजीले फूल,
खिले फिर रंग रंगीले फूल ॥

❀ जूही जरा जगी है ❀

(१)

सित, हृद्य, हीरकों-सी,
रति-दन्त-पंक्तियों-सी,
प्रिय चन्द्र-रश्मियों सी,
जूही जरा जगी है ॥

(२)

नवनीत सी, पुलक-सी,
मखमलमयी, मृदुल-सी,
निशि-क्लान्त कामिनी-सी,
जूही जरा ज़गी है ॥

(३)

मन-प्राण मुग्ध डोलें,
मधु-मत्त भृङ्ग बोलें,
तर हो रही हैं आँखें,
जूही जरा जगी है ॥

(४)

मति, मद-प्रकाशिका है,
'बेहोश' नासिका है।
मस्तिष्क तर बतर है,
जूही जरा जगी है ॥

(५)

शुचि 'शुक्र-तारिका' सी,
गन्धर्व-बालिका सी,
यौवन-भरी जम्हाती,
जूही जरा जगी है ॥

(६)

प्रिय स्पर्श, रूप, सौरभ,
तप-पुञ्ज-प्राप्त वैभव,
वह दिव्य देविका-सी,
जूही जरा जगी है॥

(७)

कर पूर्ण तृप्त अन्तर,
सुर-नर झुके निरन्तर।
प्रीति स्वयं पगी है,
जूही जरा जगी है॥

(८)

सहृदय-हृदय खिलाकर।
क्षितिमें 'सुधा' चखाकर॥
'गाङ्गेय' गेय गाकर।
जूही जरा जगी है॥

❀ मुरझी माला ❀

(१)

हा ! निरखी मुरझी माला ।
द्रुत सिसकी मृदुता-बाला ।
'रस' उड़ा कहीं, 'सौरभ' सूखा ,
'मधु' सोया, पी विष-हाला ॥

(२)

अब सूख गयी यह माला ;
'मकरन्द' नहीं अब वह है ॥
अब वह पराग 'हत' भागा ।
'मधुप' नहीं, मधु-कोष नहीं ॥

(३)

अब रङ्ग नहीं अब रूप नहीं :
अब 'छाँह' नहीं, अब धूप नहीं ॥
अब आशाओंका केन्द्र नहीं ।
अब 'माला' का अनुरूप नहीं ॥

(४)

हा ! उलट गयीं वे आँखें ;
हा ? गठन गिरा, श्लथ साखें !
यह सिकुड़ी-सी सुर-बाला ,
यह मेरी 'मुरझी' माला ॥

❀ टेसू ❀

(१)

तुम जोगिया कुर्ता पहरे ;
वह 'काली टोपी' धारे ॥
हो विचलित लख 'तितली' को ,
क्यों अपनी जीभ दिखाते ?

(२)

सुन प्रबुद्ध, 'बुद्धूमल' से ,
'टेढ़ी उँगली' का गौरव ॥
टेसू ! क्या मिलजुल आये
'घी...निकालने' भूमीका ॥

(३)

वे गोल गोल मृदु पत्ते ;
प्रिय ! पलाश ! तेरे प्यारे !
वे फूले...फूल, लगें बस !
पूरी पर 'गर्म' पकौड़ी ॥

(४)

किंशुक ! तुम 'शुक' ठोड़ीसे
भ्रमरीके अधर न छूना ।
'घुरहू' से उसे न घूरो !
'अलि' तूफ़ान उठायेगा ॥

(५)

जब मीलों तक जङ्गलमें
तुम 'प्रेतों' से खुल हँसते ॥
तब 'आग' 'अनङ्गमयी' सी ।
दिखती वसन्तकी 'होली' ॥

(६)

उस 'घीसू'-'बीसू' से मिल
तुम डालों पर चढ़ जाते।
जब आये...आँधी—'नानी'
तुम टाँग तोड़ गिर जाते॥

(७)

तुम 'कटार' हो 'रम्भा' की
कालीकी तुम 'भृकुटी' हो॥
तुम 'वासन्ती' के नख हो
पुष्प-बाणके 'फलक' तुम्हीं॥

(८)

प्रिय टेसू! आज हँसीमें
कहनेका...ख्याल न करना।
'कवि-प्रेम' समझना मनमें
हे हँसमुख! हर दम हँसना॥

❀ दलीय कुसुम ❀

(डालिया)

(१)

अरुण...अरुण कोई सुनील-द्युति,
पीत...पीत कोई छवि-धाम ।
'रुचिर क्यारियों' के नयनों-से,
श्वेत...श्वेत कोई सरनाम ।।
मृदुल दलीय...'डालिया' है यह,
'सुर-तरु' डाली से आगत ।
जय ! किन्नरियोंके प्रिय ! कन्दुक !!
जन-नन्दन हे ! शुभ स्वागत !!

(२)

हे 'वासन्ती-श्री' के भूषण !
भावुक ! हे भ्रमरी-गणके !
हे 'प्रदर्शनी' के आकर्षण !
वशीकरण गोरी-गणके ॥

माली-मन-मन्दिरके निश्चय !
बहु श्रम-वर्धित ! दृग-सुखमय !
हे 'दलीय' सुम ! विजित-विश्व-छवि !
विविध-राग-रञ्जित ! जय ! जय !!
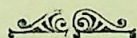
❀ हली हक ❀

[होली हक]

(१)

विविध-रङ्गमय रूप तुम्हारा।

रस-स्वरूप ! अनुरूप-सुनाम !

कुसुम हलीहक ! 'हली'-सदृश हे !

मनमौजी ! 'मादक'-छबि-धाम !!

(२)

नीचे से...ऊपर तक विकसित

सुललित-कोष ! कलामय-कोण !

प्रिय 'गाङ्गेय' मधुपसे बजते !

हे वसन्तके 'ग्रामोफोन' !!

(३)

'रति' की छबिमय सुघड़ 'छड़ी' से
तन्वी-सम तरु तनु धारी !
तुमसे ये बाँछें खिलती हैं,
खिलती 'बगिया' औ क्यारी ॥

(४)

'होली' सा हक रखनेवाले
रङ्ग जमानेमें, रङ्गीन !
पुलकित...पुष्पित मूर्ति तुम्हारी,
निरख.. नयन हो जायँ अधीन ॥

❀ अन्तिकोण ❀

(ऐण्टिकोना)

(१)

अन्तमें...हैं...'कोण' तेरे
'अन्तिकोण' ! कटाक्ष-से ।
हरित...दल हैं ललित दृग-से
'राग' वह...अनुराग-सा ॥

(२)

तुम 'गुलाबी' गाल-से जब
ललित...'लतिका' में खिलो ॥
'प्रकृति' तितली-दल सजा तब
'आरती' करती यहाँ ॥

(३)

प्रिय ! तुम 'उस' छत पर...छा...कर
'शय्या' सी हन्त ! बिछाते ॥
इन...प्राणों को, नयनों को
द्रुत खींच, वहीं...ले जाते ॥

(४)

प्रिय 'मोतियों' से 'मानिकों'-से
तुम गुच्छकोंमें खिल...कहोः—
'दो रूप' हैं ये 'एक' ही के ।
जय ! चन्द्रिके ! ऊषे ! अहो !!

(५)

तुम प्रकृति-प्रेमी सज्जनोंके
'फाटकों' पर छा...रहे ।
तुम सुमन ! 'सुन्दर-सत्य-शिव' का
गान गुन-गुन गा रहे ॥

❀ धतूरा ❀

हे मादक 'मन' के अनुज ! सुमन !
हे मादक 'मन' के अनुज ! सुमन !
सुर-बालाके सरस तमूरे !
सखे ! धतूरे ! झंकृत झूम ।
आखिर चढ़ा नशा आँखोंका
तुमने ली 'तितली' वह चूम ॥
हे रोमाञ्चित ! हे कण्टक-घन !
हे मादक 'मन' के अनुज ! सुमन !
स्वच्छ, श्वेत, वह रूप तुम्हारा
'मादक' मधु वह प्रिय ! अनुपम ।
मधु-प्यासी 'मधुमयी' आ रहीं
मधुकरियाँ मधु-हित, हरदम ॥
हे 'नारीश्वर' के शिष्य ! सु-मन !
हे मादक 'मन' के अनुज ! सुमन !

मोहन-धनी, 'धतूरा' है यह
मदन-मित्र, मद-मत्त प्रचण्ड।
कठिन कटीले 'गोलक' धर यह
कुटिलोंको जीते उद्दण्ड ॥

हे 'क्रोधित मन' के अग्रज ! फन !
हे 'मादक-मन' के अनुज ! सुमन !

भारतीय ! वर औषध ! सुखकर !
विविध रोग-हर ! शत्रुञ्जय !
प्रलयङ्कर 'शङ्कर' के सङ्गी,
तीव्र 'शूल'धर ! मृत्युञ्जय !!

हे बहुदल ! सात्विक ! रौद्र-चरण !
हे 'मादक-मन' के अनुज ! सुमन !

❀ सदाबहार ❀

या

❀ बारहमसिया ❀

(१)

तुम सदा 'बहार' दिखाने वाले,
लाल लाल दृग ! सदाबहार !
ऋतु-परतन्त्री कुसुम-गणों के
जेता ! नेता ! 'वीर'-पुकार ॥

(२)

निज 'दल' द्रोही कुटिल 'कीट' वे
मारे तुमने कटु रससे ।
शुद्ध-शाख ! हे चन्द्र-सूर्य-सम !
'श्वेत'-रक्त-छवि 'मधु-रस' से !

(३)

तीसो दिन तुम खिलने वाले !
बारहमासिये ! बारह मास ।
'तरुण' अरुण-प्रिय ! भर दो ! मेरी
ललित 'लेखनी' में उल्लास ॥

(४)

तुम 'लाल' वत्सल 'वाटिका' के
हे सहज-स्मित ! हे सरल-मन !!
जय ! मधुप-'क्रीड़ा-मगन' ! मृदु तन !
जय ! 'नित्य-विकसित' बालपन !!

****
****
**
*

❀ केवड़ा ❀

(१)

तुम 'विभूति'-मय, जटाजूट-धर !
'चन्द्रकला'-धर ! गौरी-प्रिय !!
लम्बित-भुज ! 'उद्धत'-पद्-चालक !
तुम 'केतक'-तरु ! ताण्डव-प्रिय !!

(२)

हे कठोर-भुज ! वीर केवड़े !
उग्र ! तरुण ! पालक 'पण' के।
हे सुगन्ध संगठन-प्रचारक !
उद्धारक ! हे गुण-'गण' के ॥

(३)

तुम उन विदेशी 'प्लेग'-वाहक...
चूहों के हो काल कराल ॥
विकट दुर्ग-सम ! 'बाड़' बने तुम
'उपवन'-रक्षक ! ठोंक ! ताल ॥

(४)

तीखी लम्बी 'तरवारों' से।
सजे हुए ! बांके ! रण-धीर !
'काले' नागोंके आकर्षण !
जय ! हिन्दू-हिय-हर्षण ! वीर !!

(५)

तुम 'अघोर' तुम शिव, तुम 'शूली'
उन्नत-योग ! भिषक-पूजित !!
छू कर ही तुम कर देते हो
'मातृ भूमि' का जल सुरभित ॥

❀ कौआठूठी ❀

(१)

इन्द्र-नीलमणि-सी ! नभ-छबि-सी !
योगिन-सी मुद्रामयि ! हे !
नील...नील नर्तित 'काली'-सी !
नील-कण्ठ सी द्युति मयि ! हे !!

(२)

काक-तुण्डि ! हे कौआठूठी !
विकट 'तन्त्र' की सामग्री !
जय ! वराङ्ग-छबि ! नील-पुष्पिके !
जय ! 'अपराजित' तेज करी !

(३)

अरी ! अमा-सी ! काल रात्रि-सी !
कूटनीति की श्यामल चाल !
दुष्ट-दहन-'धूमावलि'-सी ! हे !
जय ! प्रचण्ड चण्डी-जयमाल ॥

(४)

अरी ! उग्र...उपचार-रसायन !
रोग शत्रु-सेना नाशिनि !
जय ! स्व 'मूल-'संगठन-सुमति हे !
नव 'दल'—शाखा उल्लासिनि !!

(५)

घरमें वनमें इस उपवन में।
हे पुलकित ! हे कुसुम-भरी !
कृष्ण-कान्ति ! प्रिय विष्णु-कान्ति ! हे !
जय ! जय ! सुख-श्री-कान्ति-करी !!

❀ आय पुण्या ❀

(आइपोनिया)

(१)

आय-पुण्ये ! पुण्यसे किस
प्रति दिवस तुम फूलतीं ?
हन्त ! अन्त न फूलनेका
सखि ! सुखद इस 'राग' का ॥

(२)

तरुओं पर 'तिनमहले' पर
सखि ! तुम द्रुत चढ़ जातीं ।
शत शत 'विकसित' नयनों से
'अनुभाव' वहाँ नित खेलें ॥

(३)

अरुण—पीत वे अरुण अधर
लख 'विराग' हो रागी।
उस तरुण 'तरणि' से पुलकित
सखि ! तव तनु रस बरसे ॥

(४)

छवि धरें, कुसुम 'भोंपू' से
मधुकर गुन...गुन गूँजे।
सखि ! बात सुखद सच यह है—
तुम 'ग्रामोफोन'-लता ॥

(५)

आयपुण्ये ! आलि ! छविमयि !
नित्य नूतन 'राग' दो ॥
सखि ! निरन्तर फूलने का
हृदयको वरदान दो ॥

❀ आस्तर ❀

(आष्टर)

(१)

हे ! रुचिर कुसुम ! प्रिय ! आस्तर !
तुम 'शोभा' के शुभ बिस्तर ॥
तुम तीव्र 'तपों' से मिलते ।
जग खिलता, जब तुम खिलते ॥

(२)

उस छोटे से गमले में ।
तुम 'विविध नेत्र' जब खोलो ॥
तब चलता हुआ पथिक भी ।
रुक...कहता-'प्रिय ! कुछ बोलो ॥'

(३)

तुम अरुण, नील, प्रिय सित हो।
तुम तरुणीके 'विहसित' हो ॥
तुम प्यारे लगते 'श्री' से।
हे परदेशी !... देशी-से ॥

(४)

तुम जल्दी नहीं बिगड़ते,
चिर-खिले, प्यार तुम करते।
वह छाये 'प्रिय छवि' छिन छिन।
तुम 'चिरजीवी' हो चिर दिन ॥

❀ दन्तीय ❀

[डेण्टिस]

तुम रोम-सम 'फ़र'-सम...सुमन !

तुम रोम-सम 'फ़र'-सम...सुमन !!

उस...'गुटी' पर ही खिलो ! जब, खोय तितली तब द्रवित मन

तुम रोम-सम 'फ़र'-सम...सुमन !

गज-दन्त-छबि ! दन्तीय हे ! तुम सज गये 'पुखराज' बन ।।

तुम रोम-सम 'फ़र'-सम...सुमन !

प्रिय ! रुपहले ! हे सुनहले ! तुम 'मालिनी' के धन सुमन !

तुम, 'मालिनी' के धन, सुमन !

तुम, रोम-सम, 'फ़र'-सम...सुमन !!

❀ वर वीणा ❀

[भार बिना]

(१)

हे मृदुल सुमन ! वर वीणा !
तुम सीखे हिल मिल...जीना ।
तुम गुच्छे...गुच्छे खिल कर,
भर देते 'क्यारी' मिल कर ॥

(२)

रङ्गीन 'छींट' की चोली
तुम 'बगिया' को पहराते ॥
तुम प्रकृति-परीके आगे
कविता की 'वीन' बजाते ॥

❀ कर्णेशनि ❀

[करनेशन]

(१)

हे ललित कुसुम ! कर्णेशनि !
तुम 'गुलाब' से खिल...खिल कर ॥
मन मोह यहाँ हो लेते ।
उन...रञ्जित मृदु अधरों से ॥

(२)

वह...उभरे यौवनकी छवि ।
वह...प्यारी सघन पँखुरियाँ ॥
यह 'हवा' कान में कहती–
प्रिय ! कर्णेशनि ! तव गतियाँ ॥

* गुलाब *

(१)

वह 'रङ्ग' नयन-रञ्जनकारी ।
वह 'रूप' अनूप तुम्हारा ॥
वह मधुर...मधुर 'सौरभ' सुखकर ।
प्रिय ! गुलाब ! मोहित करता ॥

(२)

तुम सुरभित, सुन्दर, कोमलतर ।
अरुण...अरुण तुम 'श्री' के कर ॥
काश्मीरी 'सेवों' के सहचर ।
'अधर' उर्वशीके तुम वर ॥

(३)

हरे हरे 'पन्नों' के तरु में ।
यदि 'मानिक' के फूल लगें ॥
विकसित गुलाब-तरु ! तब तेरी ।
तुलना कुछ...कुछ यहाँ बने ॥

(४)

तुम काम-रूप, तुम विविध-वेष ।
तुम लाल, पीत, सित, जोगिया ॥
'अभिषेक' किया मधुकर-विधिने ।
तुम 'पुष्पराज' हो सचमुच ॥

(५)

वे मखमल-सी मृदु 'साटन'-सी ।
प्रिय ! तेरी मृदुल 'पँखुरियाँ' ॥
इन हाथोंमें, इन हृदयोंमें ।
हैं सुधा-स्पर्श सुख देतीं ॥

(६)

हे 'पुष्पराज' ! तेरे वर से ।
सुख-'समाधि' में यह मन लीन ॥
शीतल गुलाब-जलसे सिञ्चित ।
प्रिय गुलाब ! ये पुलकित प्राण ॥

卐

* गुलाबकी माला *

(१)

कन्दर्प-कामिनी सी ,
मधु-मञ्जु यामिनी सी ,
प्रिय-बाहु-बल्लरी सी ,
माला गुलाब की है ।

(२)

मकरन्द-बिन्दु धरती ,
अलि-बाल तृप्त करती ,
प्रिय कण्ठमें विचरती ,
माला गुलाब की है ।

(३)

सौरभ-सुधा चखाती ,
मृदु स्पर्श-गीत गाती ,
मालिन-सुयश बढ़ाती ,
माला गुलाब की है ।

(४)

जन-नयन खींच लेती ,
सुख, शान्ति, कान्ति देती,
मन 'मौन' मोह लेती ,
माला गुलाब की है ।

(५)

उद्यान–बालिका सी ,
जन-घ्राण-चालिका सी ,
'रति'-केलि-तालिका सी ,
माला गुलाब की है ।

* हसनहीना *

कुसुम 'हसनहीना' आज सीना दिखाता ;

लख अलख...'हवा' भी गन्ध-लीना बनी है ।

सुरभि सब हराई ली जम्हाई जरा जो ,

घर-घर अब छाई गन्ध भाई इसीकी ॥

* हमें प्रिय फूले फूले फूल *

हमें प्रिय फूले...फूले फूल ।
सदा जो सौरभ दें अनुकूल ॥

मधुसे पूरित प्रिय पराग-भृत ,
'लता' पर स-मुद रहे जो झूल ,
बिके हम उन फूलों पर फूल ।
हमें प्रिय फूले...फूले फूल ॥

छिदे नहीं हों भ्रमर-कीट से ,
नहों कृश, क्लान्त, कृपण, प्रतिकूल ।
महकते मधुर मधुर जो फूल ।
हमें प्रिय फूले...फूले फूल ॥

उनको देखें उनसे बोलें ,
सुरभि लें उनकी वह सुख-मूल ।
सजायें उन्हें हृदयमें फूल ।
हमें प्रिय फूले...फूले फूल ॥

नित 'गाङ्गेय' नवल रंग-रञ्जित ,
'लुभे'से ललित, चकित-चित फूल ,
भटकते यौवन-से जो भूल ।
हमें प्रिय फूले...फूले फूल ॥
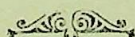
❀ गुलदस्तेकी मस्ती ❀

मद-कलित हुए क्या सूँघ सारी सुगन्धी ?

तुम प्रिय गुलदस्ते ! क्यों हँसे, बात क्या है ?

निज छबि पर फूले छेकके 'फूलदानी' ।

किसलय-दलसे क्या नाचने भी लगे हो ?

रजनी गन्धा
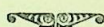
❀ सीसी सुँघाके ❀

सजनि ! रजनिगन्धा !
आज ऐसी सजी तू ।
दृग-युग जिससे ये,
मुग्ध मेरे हुए हैं ॥
मन मधुमय तेरी—
गन्ध से मस्त होता ।
कह ! यह करती क्या ?
तेज 'सीसी' सुँघाके ॥

❀ चम्पक ❀

(१)

वह...वर्ण 'सुवर्ण'-सरीखा।
वह...तीव्र सुरभि हियहारी॥
प्रिय! चम्पक! चारु कलामय!
तुम रसिकोंके जीवन हो॥

(२)

तुम मदन-महीप-मुकुटकी।
'पुखराज'-पीत कलगी हो॥
तुम ललित हरिद्रा-रञ्जित।
प्रकृति-वधूकी उँगली हो॥

(३)

घर, बाहर, उपवन, वीथो।
लख...तुम्हें गमकने लगते।
तुम स्थिर लक्ष्मीके आश्रय!
तुम प्रिय! 'पीताम्बर'-प्रेमी॥

(४)

तुम कवियोंके सहचर हो।
तुम पीत 'परी' के पर हो॥
तुम 'चम्पापुरी'*-चमक हो।
तुम 'चम्पारन'† के राजा॥

* एक नगरी, पञ्जाबकी 'चम्बा' रियासत।

† प्राचीन 'चम्पारण्य' नामक प्रसिद्ध जङ्गल, बिहारका वर्त्तमान 'चम्पारन' जिला।

❀ चम्पाकली ❀

अति प्रिय 'पियरी' से ढाँकके देह सारा।
सरल...सिकुड़ती जो सौरभ-श्री समेटे॥
मुख न 'मलिन' भौरोंको दिखाती यहाँ जो।
प्रिय सखि! वह चम्पाकी कली! तू भली है॥

❀ चन्द्रमल्लिका ❀
या
❀ गुलदाउदी ❀

—∞:∞—

(१)

मणि-कन्दुक-सी 'गुलदाउदी' की,
रमणीय छटा छहरायी यहां ।
'वनदेवी' की बालिका खेल रहीं,
शुचि श्वास-सुगन्ध समायी यहां ॥
पुखराज-सी, नीलम-मानिक-सी,
सित 'हीरक'-सी हुलसायी यहां ।
दृगको मिली चन्द्र-सी 'शीतलता',
यह 'चन्द्रकी मल्लिका' आयी यहां ॥

(२)

इन क्यारियोंमें 'गुलदाउदी' या,
गत जन्मके 'प्रेमकी ज्योति' जगी ?
सिर, हाथ, कटी पर ले 'कलसे',
ब्रज-बालिका या मुसकाने लगी ?
मदमाती मनोहर गन्धभरी,
लड़की है 'कपूर' की रंग-रँगी ?
प्रिय 'गेंद' लिये अति उत्सुक सी,
यह 'उर्वशी' या पुरु-प्रेम-पगी ?

(३)

गमलोंसे गयी 'गुलदाउदी' की,
सुदिगन्तमें कीरति घूम रही।
रसिकोंकी सनेहभरी अँखियाँ,
इसको नित प्यारसे चूम रही॥
उन क्यारियोंमें... सुकुमारियोंमें,
इस रङ्गकी, गन्धकी धूम रही।
यह चन्द्रकी चन्द्रिका खेल रही,
यह 'चन्द्रकी मल्लिका' झूम रही॥

❀ पञ्च पल्लव ❀

(१)

प्रगतिशील ! शीतल छायामय !

गुण-पट ! हे बट ! उन्नततर !

सदा स्वस्थ ! अश्वत्थ ! स्वास्थ्यकर !

ग्राम-कृपाकर ! हे पाकर !

औषधि-गणमें उदित ! उदुम्बर !

रुचिराम्बर ! प्रिय-बाल-निचय !

भारतीय-तरु-भूषण ! अनुपम !

आम्र ! ताम्र-किसलय ! जय ! जय !!

(२)

पञ्च पल्लवोंसे 'हृत्-पल्लव',
प्यार करे यह सिहर...सिहर।
मधुर, मृदुल, इनकी गीली छवि,
इन नयनों में गयी ठहर॥
मुनिजन-मित्रो! यज्ञ—प्रेमियो!
'उत्सव' की बस! बात कहो।
नित्य नूतनो! प्रिय पुरातनो!
पञ्च पल्लवो! मुदित रहो॥

(३)

हे ! 'मङ्गल-घट' के आभूषण !

दूषण ! दुख–दावानलके ।

'क्षीरी' तरुओंके कोमल कर !

साधन ! उत्सव–हलचलके ॥

पञ्चदेव-सम ! प्रजा-'पञ्च'– सम !

पञ्चाऽमृत-सम ! पावन-धाम !

'पञ्चबाण–' प्रिय ! पञ्च पल्लवो !

पञ्चेन्द्रिय-कृत तुम्हें प्रणाम ॥

****
****
**
*

❀ गन्धराज ❀

(१)

प्रिय ! गन्धराज ! सुगन्ध भर 'वह'
'बगिया' कर दी यह...पुलकित ॥
पुष्पराज ! निज 'राज-तिलक' पर
मधुकरियाँ कर दीं सुरभित ॥

(२)

तुम कामिनीके...'कर्ण'—सम हो ।
किसलय-कोमल 'नत-उन्नत' ॥
हृदय-कथा...सुननेको ही प्रिय !
तुमने रूप...अनूप धरा ॥

(३)

परम चिक्कण...मृदुल 'दल' में।
'आरसी' ... से तुम खिले ॥
प्रिय ! सुमन ! सुर–सुन्दरीकी।
'सुरभि' से तुम हो...मिले ॥

(४)

'पीत'...होकर, सूख...कर भी।
'सौरभ' तुम नहिं तजते ॥
तुम 'हवा' के परम प्रेमी।
प्रिय...पराग नित भरते ॥

(५)

'बाग' में मिल...मधुर मधु दे।
तुम 'अनङ्ग' बनो सदा ॥
'बङ्ग'— प्रेमी ! अङ्ग 'सित' धर !
तुम उमङ्ग भरो ! सदा ॥

❀ सूखे हुए ये फूल ! ❀

अब न हँसेंगे ! अब न उठेंगे !

गिरे हुए ये...फूल !

सूखे हुए ये फूल !

अब नहिं कोई सूँघे, छूए,

इनको बन अनुकूल !

सूखे हुए ये...फूल !

अब न मिलेगा इन्हें प्रेम, यश,

ना'सुख' जीवन-मूल!

सूखे हुए ये.. फूल!

'उदासीन' बन, अब उपवन में,

'मौन' धरे ये फूल!

सूखे हुए ये...फूल!

धीरे-धीरे घुट ... घुट, घटकर

होंगे बस ये धूल!

सूखे हुए ये...फूल!!

❁ कुन्द ❁

(१)

उस...हल्की-सी खुशबू से।

उस सित-सरलित चितवनसे॥

उस सहज...'सादगी' से हाँ।

किसकी आँखें नहिं खिंचतीं ?

(२)

जब तुम प्रिय ! 'कौस्तुभ मणि' से

उस तरुके वक्षः स्थलमें ।

खिलते हो, तब...खिलते हैं,

भक्तोंके 'नयन-कमल' ये ॥

(३)

सुन्दरियाँ सिरपर रखतीं ।

केश-पाश-शिक्षक ! तुमको ॥

तुम 'वेणी' के बन्धक हो,

'पहरेदार'......उरः स्थलके ॥

(४)

तुम 'तारों'—से जब...चमको !

जब 'मधुमय' हो, मृदु गमको ॥

तब...पथिक-वदन-'चन्द्रों' में ।

प्रिय कुन्द ! 'कुन्द' खिल जाते ॥

(५)

तुम धरणी-तलमें हँसते ।

तुम रमणी-करमें खिलते ॥

तुम रमते रसिक-हृदयमें ।

तुम कुन्द ! 'मुकुन्द'—पदोंमें ॥
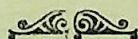
❀ विमल कमल ❀

❀ वे कमल विमल-दल गूँजें ❀

तरुण...अरुण-कर से कम्पित हो,
दल...दल 'शतदल' गूँजें ॥

× × ×

निकट प्रेम जिनका 'जीवन' से,
यौवन जिनका रवि-कर से।
गुण गण-युक्त, सुखद सौरभमय,
दूर न जो श्रीहरि-कर से ॥
मृदु मधुकरियाँ तेज तितलियाँ,
जिन्हें समुद चल पूजें।
वे कमल विमल-दल गूँजें ॥

× × ×

खुले नयन से उस 'सरसी' के,
तटसेवी जन--मनमोहक ।
'श्री कमला' के कोमल कर-से
बाल 'किरण' के पय दोहक ॥
चढ़े 'हवा' पर कान्त कमल वे,
खींच हृदय को धूजें ।
वे कमल विमल-दल गूँजें ॥

× × ×

हंस और हंसी से चुम्बित,
आर्द्र, अनोखे, कोमलतर।
मधुर कल्पना-नाल-चञ्चलित,
'हृदय-कमल' ये कवि-सहचर ॥
जल में 'उभरे' अरुण रत्न-से
जो आँखोंको पूजें।
वे कमल विमल-दल गूँजें ॥

× × ×

'नीलम' से नीले...'इन्दीवर',

अरुण 'कोकनद' 'लाल' सदृश ।

सित हीरक-से 'पुण्डरीक' प्रिय,

विविध-नाम, अवतार-सदृश ॥

नित 'पुराण' को नूतन करके,

'मधुकर' मधुमय गूँजें ।

वे कमल विमल-दल गूँजें ॥

× × ×

भारतीय पुष्पोंमें पूजित !
'पुष्पराज' ये 'कमल' मिले ।
औषधि-रूप, चिन्ह ममतामय,
हृदयों-से ये 'कमल' खिले ॥
जिनकी मधुर...लवणिमा लखकर,
नयन विहङ्गम कूजें ।
वे कमल विमल-दल गूँजें ॥

❀ फूलोंकी दुनियाँ ❀

(१)

मङ्गल-मूल फूल वे फूले,
सुर-नर-मुनि-मन खींच रहे।
अरुण-किरण औ धरणि-गगनमें,
रुचिर राग निज सींच रहे॥
'गुन-गुन-गुन' मय कविता सुनकर,
'मधुकर' को कवि जान रहे।
दे पराग, अनुराग-युक्त मधु,
गले मिले सुख मान रहे॥

(२)

अलियों और तितलियोंसे ये,
खेल अनोखे खेल रहे।
धूल-धड़का, पानी, बूँदी,
धूप-छाँह, सब झेल रहे॥
मातृभूमिका परम प्रेम-मधु,
नित्य हृदयमें ये धरते।
फूले, झड़े, बिके, उगते भी,
उस जमीनका हित करते॥

(३)

परम मनस्वी, सदा समुन्नत,
कठिन-तपस्यासे सूखे।
लीन हुए पृथ्वीमें प्यारे,
उचित मानके ये भूखे॥
कष्ट सहिष्णु, आत्म-बलि-दाता,
ये हैं अनुपम-प्रकृति-रचे।
सकल-लोक-हित, निज-सुखत्यागी,
मङ्गलमय—गुण—रत्न—खचे॥

(४)

हन्त ! गिरे वे फूल धूलमें,

कृश-तनु कैसे काँप रहे।

'अनशन' से हो अति अशक्त हा !

प्राण 'प्राण-प्रिय' त्याग रहे ॥

धीरे...धीरे क्षीण-काय वे,

मिटकर मिट्टीमें मिलते।

उस मिट्टीकी 'करुण चीख' से,

हृदय हमारे हैं हिलते ॥

(५)

'वह मट्टी' क्या फिर रस देगी ?

रङ्ग चढ़ेगा तरुवर पर।

क्या इन नयनोंसे देखेंगे,

फिर वे फूले फूल निडर ?

इस जङ्गलमें हन्त ! हन्त ! क्या

वह बहार फिर आयेगी ?

फिर फूलोंको अश्रु-सिक्त कर

'भ्रमरी' क्या सुख पायेगी ?

(६)

डाली छोड़, बाग तज, बिंधकर,
मालिन के 'बन्दी' बनकर।
बोले 'सुमन' अश्रु-कण-संयुत,
खुले बजारोंमें बिक कर॥
यद्यपि शूल-समान कष्ट ये,
हन्त! 'फूल हम' पाते हैं।
पर प्रियतम के कण्ठ-हार बन,
दुःख भूल सब जाते हैं॥

(७)

रङ्ग-बिरङ्गे विविध सुरभि-युत,

अहो ! अनूठे फूल खिले ।

स-रस सृष्टिके चित्र मनोरम,

रमणीके सुख-मूल मिले ॥

देवोंके, नरदेवोंके सिर

शोभित ये ही करते हैं ।

लुटा लुटाकर मधु पराग ये,

'कर्ण'-शीर्ष पर चढ़ते हैं ॥

(८)

कपट-कपाट खोलकर देखा,
स्वार्थ-हेतु सब हित-अनहित ।
फूलोंकी दुनियाँमें देखा,
सहज 'फूलना' परके हित ॥
फूलोंकी है 'होड़' यहाँ पर,
हलचल है बस फूलोंकी ।
फूलोंकी है छटा यहाँ पर,
बड़ी माँग है फूलोंकी ॥

(९)
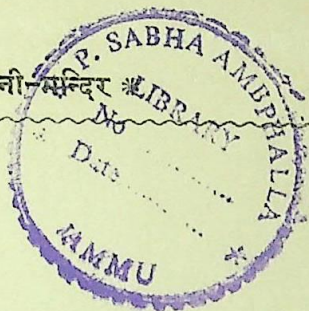
'उषा' धो रही ओस-कणोंसे,
फूलोंका मुखड़ा सुन्दर।
किसलय-करसे प्यार कर रही,
सजा सजा कर मधु-सीकर॥
वत्सलता से, बहु विध बाजे,
रुचिर 'विहङ्गम'-मिस देती।
हर्षित होकर हवा-रूपसे,
हन्त! बलैयाँ है लेती॥

(१०)

हे अनङ्गके दिग्विजयी शर !
हे ! हे वसुधाके तारो !
पुरस्कार ! हे प्रेम-पन्थ के,
हे ऋतुओंके अवतारो !!
हे भक्तोंके पूजा-साधन !
हे कवियोंके सहकारी !
हे ! हे ललित कलाके मित्रो !
सदा तुम्हारी बलिहारी !!

(११)

सचमुच प्यारे ! फूलो ! तुमने,
'जूड़े' में गुथ सुरभि गही ।
'कर्णफूल' बन सीखा खिलना,
ली छबि बन कर 'हार' सही ॥
'पहुँची' बन पहुँचे गुरुकुल में,
ललित कला सीखी सारी ।
'काञ्ची' बन कर ली कोमलता,
बन "पजेब" गति ली न्यारी ॥

(१२)

धन्यवाद है तुमको फूलो !
तुम 'गन्धर्व' रसिक-चनके ।
प्रतिनिधि तुम हो सुन्दरताके,
मोहक हो मोहन-मनके ॥
निर्मलताके ललित केन्द्र, हे !
संजीवन वह जीवन दो ।
हे माधुर्य-निधान ! प्राण-प्रिय !
मुझे मधुर 'मधु—सा' मन दो ॥

(१३)

अहे ! त्यागमय ! प्रेम-नेममय !
गुणमय ! सौरभमय फूलो !
प्रभु-प्रिय ! हे पृथिवी के रत्नो !
मेरे उपवनमें फूलो ॥
शिशुओं–सा वह 'मधुर–स्मित' कर,
मुझे मोह लो ! महिमामय !
तप्त हृदय यह निज-स्पर्शसे,
शीतल कर दो ! करुणामय !!

(१४)

अहो ! आज निरखी सुन्दरता,
सूँघी सुरभि हृदय हारी ।
छूई कुसुमों की कोमलता,
सुनी रागिनी सुखकारी ॥

सचमुच ! इस 'गाङ्गेय'-बागमें,
मिला दिव्य आनन्द विमल ।
देख देख 'फूलोंकी दुनियाँ',
फूल गया यह हृदय-कमल ॥

❀ अन्तिम-अक्षत ❀

(१)

माता श्रीरामदेव्याख्या यस्य साध्वी-शिरोमणिः ।
पिता च परमो विद्वान् श्रीमान् 'कृष्णदयालु'*कः ॥

(२)

"गाङ्गेयो" पामिधः सोऽयम् कविः, शास्त्री, नरोत्तमः ।
'लोक-सेवा'र्थ मेवैतत् कृतवान् नम्र भावतः ॥

❀ सम्पूर्ण ❀

---

*षड्दर्शनाचार्य, तान्त्रिक-शिरोमणि,
स्वर्गीय पं० कृष्ण दयालु शास्त्री ।

कभी ही आती है। शास्त्रीजीकी हृदय स्पर्शिनी शैली किस सहृदय हृदयको आन्दोलित न करेगी ? ... ...

श्रीभगवतीचरण वर्मा—यह पुस्तक शास्त्रीजीकी विद्वत्ता और कवित्व-ज्ञानसे ओत-प्रोत है। शास्त्रीजीमें मौलिकता है और उस मौलिकतासे भरी उनकी प्रतिभा है।

हि० सा० सम्मेलनके साहित्य-मन्त्री—श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'—काव्यकी दृष्टिसे यह अद्भुत और अमूल्य ग्रन्थ-रत्न है। आपकी मर्मस्पर्शी कारुणिक उक्तियाँ हृदयपर अपनी छाप छोड़ जाती है। ... ...

श्री गुलाबरत्न वाजपेयी 'गुलाब'—इसकी लहरें अत्यन्त निर्मल हैं। पाण्डित्यकी तेजस्वी किरणें चमक रही हैं। लालित्यका शीतल झरना झर रहा है। ... ...

ठाकुर श्रीनाथसिंह—पुस्तक मुझे बहुत पसन्द आयी। जैसा नयनाभिराम गेटअप है, वैसी ही 'रसमयी रचनाएं' संगृहीत हैं। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये। ... ...

'करुण-तरंगिणी'

के विषयमें प्रख्यात पत्र-पत्रिकाओंके कुछ अभिमत—

विशाल भारत—प्रत्येक कविता कविकी सर्वतोमुखी प्रतिभा, कल्पनाशक्ति और नीतिज्ञताकी परिचायक है। भाव-गाम्भीर्यके साथ ही भाषाका सौष्ठव और कल्पनाकी अनोखी उड़ान सोनेमें सुहागेका काम करती है। ... ...

सुकवि—'करुण तरङ्गिणी'की करुण रागिनी मर्मस्पर्शिनी गतिसे भाव-सुधाका वर्षण करती है। कुशल 'कवि' की लेखनीका कमाल देखते ही बनता है। ... ...

वर्तमान—भाषाकी सरलता एवं भावोंकी उच्चता रचनाओं-की खास वस्तु है। श्री 'गाङ्गेय'जीको अपने मौलिक भावोंपर पूर्ण अधिकार है। इसीलिये हर जगह उनकी यह दृढ़ता स्पष्ट झलकती है। ... ...

विश्वमित्र—पुस्तक आरम्भसे अन्त तक सरस और भाव-मय कविताओंसे पूर्ण है। प्रायः सभी विख्यात विद्वानोंने इसकी प्रशंसा की है। ... ...

लोकमान्य—इस महत्त्वपूर्ण पुस्तकमें समाज-विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, ज्योतिष, मनोविज्ञान, अध्यात्म, इतिहास आदिकी पुटें सर्वत्र दिखायी पड़ती हैं। ऐसे ग्रन्थके लिये शास्त्रीजीको भूरि २ धन्यवाद ! ... ...

विश्ववाणी—'गाङ्गेय'जीकी काव्य-प्रतिभा सर्वतोमुखी है। और भक्ति भाव तो उनके काव्यकी निधि है। इस कृतिका हृदयसे स्वागत ! ... ...

संकीर्तन—शास्त्रीजीके इस मर्मस्पर्शी कारुणिक-काव्य-ग्रन्थको पढ़नेवाले हिन्दी प्रेमी भाव-विभोर हो उठेंगे। ...

सम्मेलन पत्रिका—कवितायें सरस, भावपूर्ण और सुन्दर शब्द-विन्याससे पूर्ण हैं। इस सफलताके लिये शास्त्रीजीको बधाई है। ... ...

माधुरी—पंडितवर गांगेय नरोत्तम शास्त्री गद्य और पद्य दोनोंकी रचनामें सिद्ध-हस्त हैं। करुण-तरंगिणीमें आपकी निराली प्रतिभाके दर्शन पाकर परम प्रसन्नता प्राप्त की। गांगेयजी एक सहृदय कवि हैं। ... ...

राष्ट्रीय दैनिक 'आज'—'करुण तरंगिणी' शास्त्रीजीका मर्मस्पर्शी कारुणिक काव्य-ग्रन्थ है। संकलित कविताओंमें सरसता है और है सीधे हृत्स्थलको स्पर्श करने वाली अनुभूति। उनमें आडम्बर नहीं, व्यर्थ की उड़ान नहीं और न है किसी-'वाद' की विवादात्मक झलक। रचनाओं में अपनापन है, जो बहुत ही आकर्षक और रम्य है। ... ...

× × × ×

ऐसी ही अनेकों अन्य महत्वपूर्ण सम्मतियाँ हैं।

पं० गांगेय नरोत्तम शास्त्रीके विरचित अन्य ग्रन्थ :-

१ श्रीरघुनाथ स्तवराज, भक्ति-संवलित ललित रचना ।
२ गाङ्गेय-वाग्बाण, ओज-युक्त हिन्दी गान और रा० कविताएँ।
३ प्रणय-पूरण, हिन्दी, सरस उपन्यास ।
४ अन्योक्ति-रत्नावली, अभूतपूर्व अन्योक्तियाँ ।
५ आचरण-दर्शन, हिन्दी, आचार सम्बन्धी ।
६ श्रीकाशिराज-पद्य-पुष्पाञ्जलि, संस्कृत-हिन्दी ।
७ समस्या-पूर्ति-चन्द्रिका, समस्या-विषयक ।
८ कर्ममें धर्म, कर्मकाण्ड सम्बन्धी ।
९ श्रीसङ्कटमोचन स्तवराज, भावुकता-पूर्ण काव्य ।
१० भारतीय-महिला-महत्त्व, हिन्दी, रुचिर निबन्ध ।
११ वैश्य-समाज, हिन्दी, सामाजिक निबन्ध ।
१२ गांगेय-गद्य-माला, अनेक प्रकारके संस्कृत-हिन्दीके गद्य ।
१३ श्रीकाश्मीरेश-प्रशस्ति, ललित लघु काव्य ।
१४ स्पृश्याऽस्पृश्य-व्यवस्था, धर्मशास्त्र सम्बन्धी निबन्ध ।
१५ भारतीयोद्बोधन, सरस राष्ट्रीय कविताएँ ।
१६ अमन सभा नाटक, हास्य-युक्त, नैतिक, स्वाधीनता-समर्थक।
१७ गाङ्गेय-दोहावली, कोमल, कठोर, भव्य भावोंसे परिपूर्ण ।

पं० गांगेय नरोत्तम शास्त्रीके अन्य ग्रन्थः—

१८ **श्रीवामन-विजय**, हिन्दी, सर्वाङ्ग सुन्दर अपूर्व नाटक ।

१९. **निर्वेद-वेदन**, करुण रस-प्रधान, विविध अलङ्कार-युक्त ।

२० **श्रीहनुमज्जन्म-वर्णन**, संस्कृत, नवरस-युक्त, 'महाकाव्य' ।

२१ **साहस-समालम्बन**, वीररस-प्रधान, विचित्र युद्ध वर्णन ।

२२ **सपण-घोटक-धावन**, ऐतिहासिक ।

२३ **श्रीतिलक स्तोत्र**, हिन्दी, स्वातन्त्र्य-नीति-पूर्ण ।

२४ **गाङ्गेय-गीत-गुच्छक**, नवीन लयोंमें निर्मित मधुर गान ।

२५. **आर्य-साम्राज्यमें नमक-कर**, खोज-पूर्ण निबन्ध ।

२६. **वेदोंमें बिजली**, वैज्ञानिक निबन्ध ।

२७ **श्रीगङ्गा-गुण-माला**, द्रवित भक्तिमयी रचना ।

२८ **श्रीलण्डन स्तोत्र**, प्रतिपद-श्लेष-कूटनीति-हास ।

२९. **भारतीय वायुयान**, हिन्दी, वैज्ञानिक ।

३० **ब्राह्मण सम्राट् पुष्यमित्र शुङ्ग**, ऐतिहासिक ।

३१ **गाङ्गेय तरङ्ग**, हिन्दी, हास्यरस-पूर्ण छींटे ।

३२ **चारो वेदोंमें आयुर्वेद**, वैद्यक-विषयक ।

३३ **आत्मानन्द**, शान्तिमयी दार्शनिक रचना ।

३४ **नूतन निकुञ्ज**, हिन्दी, नवरस-युक्त, भव्य भाव-संयुक्त काव्य।

३५. **करुण तरङ्गिणी**. हिन्दी, रुचिर करुण काव्य ।